Dr. Madan Paswan, History

Class: B.A. Part-II (H.) Paper-III

Topic: Iqta System...

Lecture No. 19

Date: 15.10.2020

Continue Lecture...

वस्तुतः मुक्ता एक हस्तांतरणीय पद था, जिसमें सामंती परंपरा की कोई भावना निहित नहीं थी। इस प्रथा का प्रमुख दोष यह था कि केंद्रीय प्रशासन सशक्त होने के बावजूद प्रशासकीय अक्ता पर नियंत्रण बनाये रखने या मुक्ता के अन्याय को रोकने की कोई व्यवस्था नहीं की गई थी। पुनः इसके अन्तर्गत अधिकार का केंद्रीकरण या केंद्रीय सरकार की सत्ता में रियायत की कोई व्यवस्था विकसित नहीं हुई थी।

शक्तिशाली शासक के अधीन यह प्रथा राज्य के एकीकरण में सहायक रही जबकि दुर्बल शासक के समय में यह राजनीतिक विघटन का कारण बनी।

सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था:

दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। 13वीं शताब्दी में शहरी केन्द्र का उदय हो रहा था। साथ ही हस्तशिल्प उत्पादन तथा वाणिज्य एवं व्यापार की भी प्रगति रही थी।

मुहम्मद हबीब के अनुसार सल्तनतकालीन शासन प्रणाली अपने पूर्ववर्ती शासन प्रणाली का गुणात्मक रूप से भिन्न थी। उन्होंने इन परिवर्तन को शहरी के फैलाव तथा कृषि संबंधों के परिवर्तन के रूप में देखा है।

प्रो० हबीब के अनुसार नये तुर्क शासक केवल दस्तकारी विनिर्मिताओं के उत्पादन में रुचि रखते थे, न कि जाति में। सल्तनत काल से पहले जाति व्यवस्था के कारण ही शासक दस्तकार अभी तक दबा हुआ था तथा उनके गतिशीलता का भी अभाव था। तुर्की शासक में से अधिकतम राजस्व प्राप्त करना चाहते थे। उन्होंने ऐसी नीति को अपनायी जिसके तहत मध्यवर्ग जमींदारों की समाप्ती हो गयी। ये मध्यमवर्ग के लोग अपने वर्ग बचत का अधिकांश हिस्सा हड़प लेते थे तथा किसानों पर अत्याचार करते थे।

प्रो० हबीब के अनुसार ये परिवर्तन इतने आधारभूत थे कि उन्हें क्रमशः 'शहरी क्रांति' तथा 'ग्रामीण क्रांति' कह दिया था यह नई अर्थव्यवस्था पूर्ववर्ती अर्थव्यवस्था से भिन्न थी।

इरफान हबीब, प्रो० हबीब की उपर्युक्त अवधारणा से एक हद तक सहमत हैं। उनके अनुसार, सल्तनत काल में शहरी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ जिनके निम्न कारण थे – शहरों का आकार तथा जनसंख्या में वृद्धि, प्रौद्योगिक परिवर्तन का उपयोग करने वाले मुख्य रूप से मुसलमान थे तथा इसका उपयोग भारत में 14 वीं शताब्दी में हुआ।

Continue...